

सज्दा-ए-सह्व का तरीका किताब व सुन्नत की रौशनी में

सज्दा-ए-सह्व का तरीका

सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए ही हैं

सह्व का मतलब है “भूल जाना, ग्राफिल हो जाना, दिल का दूसरी तरफ केन्द्रित होना”

सज्दा सह्व असल में सूजुद अल्-सह्व है जिसका मतलब है नमाज़ में कोई भूल हो जाने पर दो सज्दे ज्यादा करना। उर्दू-हिन्दी की आम ज़बान में इसे सज्दा-ए-सह्व कहा जाता है। सज्दा ए सह्व अल्लाह तआला की मुसलमानों पर मेहरबानी, नरमी और आसानी का नमूना है। अगर नमाज़ में किसी कमी या ज्यादाती या भूल चूक की वजह से पूरी नमाज़ ही बातिल (निष्कासित) करार दी जाती तो फिर से शुरू से नई नमाज़ पढ़ना पड़ता।

नमाज़ में तीन किस्म के कार्य शामिल हैं।

1. बहुत ज़रूरी : जिन के बगैर नमाज़ अदा ही नहीं होती मिसाल के तौर पर सूरह फातिहा।
2. जरूरी : जिन के रह जाने से सज्दा सह्व करना पड़ता है, अगर न करें तो नमाज़ पूरी नहीं होगी।
3. वह जिनके रह जाने पर सज्दा सह्व नहीं करना पड़ता है।

सज्दा सह्व वाज़िब है या सुन्नत :

कुछ फुक्रहा ने इन सज्दों को वाज़िब और कुछ ने सुन्नत कहा है।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने नमाज़ में भूल चूक का शिकार हो जाने वाले नमाज़ी को हुक्म दिया कि “**वह दो सज्दे कर ले**” [सहीह बुखारी, 401]

इसलिए ये सज्दे वाज़िब हों या सुन्नत ! नमाज़ की कमी दूर करने के लिए ये सज्दे करने ही चाहिए।

बहुत से लोग नमाज़ में बहुत बार भूल जाते हैं या उन्हें वसवसा आता रहता है कि मालुम नहीं फलां रूकन अदा किया कि नहीं ? या फलां दुआ या तस्बीह कितनी बार पढ़ी ? याद रहे कि हर ख्याल या वसवसा ऐसा नहीं कि उसे सज्दा सह्व अदा करने की वजह समझ लिया जाए।

शैख मुहम्मद बिन सालेह अल्- उसैमिन् (रहिमहुल्लाह) फरमाते हैं कि तीन हालात में शक़ को कोई अहमियत् न दी जाए :

1. अगर नमाज़ के बीच वहम पैदा हो जिस की कोई बुनियाद नहीं होती जैसा कि वसवसा वगैरह आता है।
2. जब नमाज़ी को बकसरत वहम में पड़ जाने की बीमारी हो कि जब भी नमाज़ के लिए खड़ा हो तो वहम का शिकार हो जाए।
3. नमाज़ से फरागत के बाद शक़ पड़ जाए तो उस की तरफ कोई तवज्जो न दी जाए। [अज़-फतावा, अस्थाब अल्-हदीस, सफा-120]

इन तीन हालात के अलावा अगर शक पड़ जाए तो वह क्राबिले ऐतबार होगा।

सज्दा-ए-सह्व करने का तरीका :

पहला तरीका :

1. नमाज़ पूरी कर के सलाम फेरने से पहले या सलाम फेरने के बाद अल्लाहु अकबर कह कर सज्दे में जाएँ।
2. सज्दे में सज्दे वाली दुआएं और तस्बीहात में से जो भी पढ़ लें दुरुस्त है।
3. फिर अल्लाहु अकबर कह कर जलसा-ए-इस्तराहत करें
4. फिर अल्लाहु अकबर कह कर सज्दे में जाएँ और सज्दे की तस्बीहात पढ़ें।
5. अल्लाहु अकबर कह कर सज्दे से सर उठा कर कादे कि शकल में बैठ जाएँ।
6. दाएँ और बाएँ सलाम फेर दें।

सज्दा-ए-सहु का तरीका सहीह बूखारी की रिवायत किताबुस्सलात, 482 और मुस्लिम हदीस-573 में जूल यदैन की हदीस में बयान किया गया है।

दूसरा तरीका :

कुछ ज़ईफ हदीसों से ये तरीका भी मिलता है :

1. नमाज़ के आखिर में सलाम फेरने से पहले उसी तरह दो सज्दे कर ले जिस तरह ऊपर बयान किया गया है।
2. उन दो सज्दों के बाद कादे में बैठ कर तशहूद पढ़ कर दुआएं पढ़ें और सलाम फेरें। अबू दाऊद-1039, तिर्मिज़ी-393, इर्वा अल्-ग़लील-403 वगैरह में ये तरीका बयान किया गया है लेकिन इस तरीके को बयान करने वाली तमाम अहादीस ज़ईफ हैं।

इब्न सीरीन रहिमहुल्लाह से पूछा गया : “क्या सह्व के सज्दे के बाद तशहूद है ?” उन्होंने जवाब दिया : “अबू हूरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी हदीस में तशहूद का जिक्र नहीं है।” [सहीह बुखारी, हदीस-1228]

निष्कर्ष :

सज्द-ए-सह्व के बाद सलाम फेर लेना ही अफज़ल है क्योंकि ये तरीका सहीह अहादीस से साबित है। सज्द-ए-सह्व के बाद तशहूद पढ़ कर सलाम फेरने से भी सज्द-ए-सह्व हो जाता है हालांकि ये तरीका ज़ईफ अहादीस से लिया गया है। [देखिए अल्-दुरर अल्-बहिय्या अज़ इमाम शौकानी, तहक़ीक व इफादात अज़ अल्लामा अलबानी]

सज्दा-ए-सह्व का ग़लत तरीका :

तशहूद, दरूद और दुआ के बाद सिर्फ एक ही तरफ सलाम फेर कर सज्द-ए-सह्व करना साबित नहीं, सूनन तिर्मिज़ी की हदीस -395 से इसकी दलील दिया जाता है लेकिन यह हदीस शाज़ है। [तहक़ीक अल्लामा अलबानी, देखिए फिक्ह अल्-हदीस, तशरीह अल्-दुरर अल्-बहिय्या अज़-इमाम शौकानी]

सज्दा-ए-सह्व कब करना चाहिए ?

मुहद्दीसीन और फूक़हा की इस बारे में मुख्तलीफ राय है जो मन्दरजा ज़ेल है:

सलाम के बाद सज्दा-ए-सह्व किया जाए, यह इमाम नख्शी, इमाम सौरी, इमाम हसन और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की राय है।

सलाम से पहले किया जाए, यह इमाम मकहूल, इमाम जुहरी, इमाम औज़ाबी, इमाम शाफ़ाबी और इमाम लैस की राय है।

नमाज़ में ज़यादती की सूरत में सलाम के बाद और कमी की सूरत में सलाम से पहले किए जाएँ, यह इमाम मालिक बिन अनस, इमाम अबू सौर, इमाम मुज़नी की राय है। इमाम अहमद की राय यह है कि सज्दा-ए-सह्व के बारे में जो कुछ अहदीस में है उसी तरह किया जाए।

निष्कर्ष :

सलाम से पहले और सलाम फेरने के बाद दोनों तरह जायज़ है।

चाहे सलाम फेरने के बाद बातें भी कर चुके हैं तो भी सज्दा-ए-सह्व कर लिया जाए।

चाहे नमाज़ की जगह से उठ कर किसी दूसरी जगह पर भी जा चुके हैं तो भी सज्दा-ए-सह्व कर लिया जाए।

याद आने पर या किसी के बताने पर सज्दा-ए-सह्व कर लिया जाए।

ज्यादा रक़अतें पढ़ जाने पर :

अब्दुल्लाह बिन मसअूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुहर की नमाज़ पाँच रक़अत पढ़ाया तो आप से कहा गया : “क्या नमाज़ में इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) कर दिया गया है ?” आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : “वह क्या ?” सहाबा ने कहा : “आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पाँच रक़अत नमाज़ पढ़ी है” तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सलाम के बाद दो सह्व के सज्दे किए [सहीह बुखारी 1226, मुस्लिम 572]

एक रिवायत में है कि (सहाबा के ध्यान दिलाने पर).... आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) क़िब्ला की तरफ हुए और दो सज्दे किए, फिर सलाम फेरा और हमारी तरफ हो कर फरमाया : “मैं भी तुम्हारी तरह इन्सान हूँ और मैं भी भूलता हूँ जैसे तुम भूलते हो, इसलिए जब मैं भूल जाया करूँ तो मूझे याद दिला दिया करो।” [सहीह बुखारी 401, मुस्लिम 572]

निष्कर्ष :

अगर कोई चार रक़अत नमाज़ की बजाए पाँच रक़अत पढ़ ले तो वह सज्दा-ए-सह्व करे।

इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम सौरी की राय के मुताबिक़ अगर चौथी रक़अत में तशहूद नहीं बैठा और पाँचवी रक़अत के लिए खड़ा हो गया तो उस की नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी।

जबकि दूसरे तमाम फ़ुक्रहा की राय यह है कि नमाज़ फ़ासिद नहीं होगी, वह पाँचवी रक़अत पढ़ कर सज्दा-ए-सह्व कर ले।

इमाम अबू हनीफ़ा कहते हैं कि अगर चौथी रक़अत भी मुकम्मल कर ले इस तरह ये चार रक़अत फ़र्ज़ और दो रक़अत नफ़्ल हो जाएँगी।

अगर पहले तशहूद में बैठना याद न रहे :

मुगीरा बिन शअबा रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जब कोई आदमी दो रक्अतों के बाद (तशहूद पढ़े बगैर) खड़ा होने लगे और अभी पूरी तरह खड़ा नहीं हुआ हो तो बैठ जाए,लेकिन अगर पूरी तरह खड़ा हो गया तो फिर न बैठे और सलाम फेरने से पहले सह् के दो सज्दे कर ले। [अबू दाऊद, 1036]

अब्दुल्लाह बिन बहीना रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को जूहर की नमाज पढ़ायी, और पहली दो रक्अतें पढ़ कर खड़े हो गए,(कअदे में) सहुअन् न बैठे, लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ खड़े हो गए और (आखिरी कअदे में सलाम फेरने का वक़्त आया) तो लोग सलाम फेरने का इन्तिज़ार करने लगे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तक़बीर कही जब कि आप बैठे हुए थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सलाम फेरने से पहले दो सज्दे किए फिर सलाम फेरा। [बुख़ारी, 829,मुस्लिम-570]

निष्कर्ष :

अगर दो रक्अत नमाज़ के आखिरी तशहूद में बैठना याद न रहे और खड़ा हो जाए तो अगर अभी पूरा खड़ा नहीं हुआ तो बैठ जाए और नमाज़ मुकम्मल कर के सलाम फेर ले, इस सूरत में सज्दा सह् नहीं है।

अगर तशहूद में बैठने की बजाए पूरा खड़ा हो गया तो अब ये तिसरी रक्अत पूरी करने के बाद तशहूद बैठ कर सलाम फेरने से पहले सह्के दो सज्दे कर ले।

तीन या चार रक्अत के पहले तशहूद में बैठना याद न रहे तो अगर पूरा उठने से पहले याद आ गया तो वह दोबारा बैठ जाए और तशहूद कर ले, अगर मुकम्मल क्रियाम में खड़ा हो चूका है तो अब तशहूद न बैठे बल्कि नमाज़ मुकम्मल करे, और सलाम फेरने से पहले सह्के दो सज्दे कर ले।

अगर चार रक्अत नमाज़ के पहले तशहूद में बैठना याद न रहे तो नमाज़ मुकम्मल चार रक्अत पढ़ने के बाद सलाम फेरने से पहले सह् के दो सज्दे कर ले।

अगर कोई रक्अत रह जाए :

अबू हुरैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जूहर या अस्र की नमाज़ पढ़ायी और दो रक्अत पढ़ कर सलाम फेर दिया, कुछ सहाबा (नमाज़ पढ़ कर) मस्जिद से बाहर आ गए और कहने लगे कि क्या नमाज़ कम हो गयी है ? एक सहाबी जूल यदैन रजियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि क्या आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भूल गए या नमाज़ कम हो गयी है ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : न मैं भूला हूँ और न ही नमाज़ कम हुई है। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सहाबा किराम से पूछा : “क्या जूल यदैन सच कहता है ?” उन्होंने कहा : “हाँ” फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़े और छूटी हुई नमाज़ पढ़ी, फिर सलाम फेरा, फिर दो सज्दे किए,फिर सलाम फेरा। [सहीह बुख़ारी 482, मुस्लिम 573]

नमाज से फारिग हो कर बातें कर चुकने के बाद :

इमरान बिन हुसैन रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अस्र की नमाज पढायी, और तीन रक़अत पढ़ कर सलाम फेर दिया और घर तशरीफ ले गए, एक सहाबी खिरबाक़ रजियल्लाहु अन्हु आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सह्वा (भूलने) का जिक्र किया तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तेज़ी से लोगों के पास पहुँचे और खिरबाक़ रजियल्लाहु अन्हु की बात की तस्दीक़ चाही, लोगों ने कहा खिरबाक़ रजियल्लाहु अन्हु सच कहते हैं, फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक रक़अत (नमाज) और पढायी, फिर सलाम फेरा और दो सज्दे किए, फिर सलाम फेरा। [सहीह मुस्लिम, 574]

निष्कर्ष :

अगर कोई रक़अत रह जाए तो जितनी रक़अत रह गयी हैं, याद आ जाने पर दोबारा उतनी रक़अतें पढ़ने के बाद सलाम फेरने से पहले सज्दा सह्वा कर लें।

अगर शक़ हो कि कितनी रक़अतें पढ़ी हैं :

अबू सईद खुदरी (रजियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है , रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया जब तुम में से किसी को नमाज के दौरान शक़ पड़ जाए कि उसने कितनी रक़आत पढ़ी हैं, तीन या चार, ऐसी सूरत में शक़ को नज़र अन्दाज़ कर के जिस पर यक़ीन हो उस पर नमाज की बुनियाद रखे, फिर सलाम फेरने से पहले सह्वा के दो सज्दे कर ले। अगर उस ने पाँच रक़आत पढ़ ली हैं तो ये सज्दे उस की चौथी रक़अत के क़ायम मक़ाम होंगे और अगर वह पहले ही नमाज पूरी कर चुका है तो ये सज्दे शैतान की ज़िल्लत और रूसवायी का कारण होंगे। [मुस्लिम, किताब अल्-मसाजिद, 175]

अब्दुर्रहमान बिन औफ (रजियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : “जिस शख्स को नमाज में ये शक़ पड़ जाए कि उसने एक रक़अत पढ़ी है या दो तो वह उस को एक रक़अत यक़ीन कर ले और बाक़ी की नमाज पूरी कर ले और जिस को यह शक़ हो कि उसने दो रक़अत पढ़ी हैं या तीन तो वह उस को दो रक़अत यक़ीन कर ले और फिर (आखिरी क़अदे में) सलाम फेरने से पहले (सह्वा के) दो सज्दे कर ले।”

[तिर्मिज़ी 398, इब्न माज़ा 1209]

निष्कर्ष :

जितनी रक़अतें पढ़ने का यक़ीन हो उतनी संख्या को मान कर के बाक़ी की रक़अतें पूरी कर ले और सलाम फेरने से पहले सज्दा सह्वा कर ले।

सोच विचार कर ले और अगर रक़अतों की संख्या पर विश्वास न हो तो फिर कम संख्या को ज़हन में रख कर बाक़ी नमाज पूरी कर के सलाम फेरने से पहले सह्वा के दो सज्दे कर ले।

[देखिए अद्-दूरर अल्-बहियया, अलाम- 244/1, अल्-बदाय वल्-सनाय् 1/168]

सूरह अल्-फातिहा या बिस्मिल्लाह भूल जाने पर :

सूरह फातिहा के बग़ैर रक़अत नहीं होती, बिस्मिल्लाह भी सूरह फातिहा का हिस्सा है इसलिए इन दोनों को भूल जाए तो :

“अगर क्रियाम ही में याद आ गया तो दोबारा तस्मिया से किरात शुरू कर ले।” अगर बाद में याद आया तो इस रक़अत को अमान्य समझ कर आखिर में और एक रक़अत पढ़ सज्दा सह् कर ले। [अज़् मौलाना मुब्बशिर अहमद रब्बानी]

रूकूअ भूल जाने पर :

अगर अभी सज्दे में नहीं गए और याद आ गया तो रूकूअ कर लें। अगर सज्दे में चले जाने के बाद याद आय तो अब इस रक़अत को शुमार न करें और आखिर में और एक रक़अत का इज़ाफा कर लें, क्योंकि रूकूअ न हो तो रक़अत नहीं होती। [मौलाना मुब्बशिर अहमद रब्बानी] और सलाम फेरने से पहले सह् के दो सज्दे भी कर लें।

सज्दा भूल जाने पर :

अगर क्रियाम में पूरा खड़ा होने से पहले याद आ गया तो सज्दे में चला जाए वरना आखिर में सलाम फेरने से पहले सह् के दो सज्दे कर ले।

अगर तशहूद बैठ गए और दो मिनट बाद याद आया तो सज्दा कर ले नहीं तो आखिर में सह् के दो सज्दे कर ले।

वित्र में दुआए कुनूत पढ़ना भूल जाने पर :

वित्र में दूआए कुनूत अगर पढ़ना याद न रहे तो इस पर सज्दा-ए-सह् नहीं है क्योंकि दुआए कुनूत पढ़ना वाजिब नहीं। बगैर दुआए कुनूत के भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वित्र की नमाज़ पढ़ी है। [देखिए- फतावा सिराते मुस्तकीम, मौलाना अहमद मीर पूरी, स-232]

अगर इमाम भूल जाए :

अगर इमाम भूल जाए तो इमाम के साथ मुक़तदी भी सज्दा सह् करेंगे। देखिए [सहीह बुख़ारी, 829, मुस्लिम-570, इबने माजा, 1206]

अगर मुक़तदी भूल जाए तो वह अकेला सज्दा सह् करेगा। [अल्-मुहल्ला अज़् इमाम इब्न हज़म, 161/3]

अगर इमाम सिरी नमाज़ में जहरी किरात कर बैठे :

अहतियात यही है कि सिरी नमाज़ में भूल कर ज़हरी किरात करने पर सज्दा सह् कर लिया जाए। [फतावा सिराते मुस्तकीम, सफा-189 मौलाना मुहम्मद अहमद मीर पूरी रहिमहुल्लाह]

किन चीजों के भूल जाने पर सज्दा सह् नहीं :

- * तकबीर-ए-तहरीमा के बाद सना और नमाज़ की शुरूआती दुआएँ भूल जाने पर।
- * तअव्वुज़ भूल जाने पर
- * सूरह फातिहा के बाद किरात करना भूल जाने पर [मौलाना मुब्बशिर अहमद रब्बानी]
- * रफ़अ् यदैन न करने पर
- * रूकूअ् में सज्दे वाली तस्बीह पढ़ जाने पर।

- * सज्दे में रूकूअ़ वाली तस्बीह पढ़ जाने पर ।
- * जलसा-ए-इस्तिराहत में जम कर न बैठने पर ।
- * तशहूहुद में उँगली को उठाने या हरकत न देने पर
- * आखिरी क़ाअ्दे में दरूद के बाद दुआएँ न पढ़ने पर ।
- * वित्र में दुआए कुनूत न पढ़ने पर ।
- * दूसरी तरफ सलाम न फेरने पर ।

[स्रोत- उम्मे अब्द-मुनीब की किताब सज्दा-ए- सह्द से लिया गया]